क्या कहाँ छुपा है!

सन छियासी खिसकता मुझसे बेहद दूर जा चुका था। इसी वर्ष डरा सकपकाया मैने बर्लिन मे कदम रखा था। न सिर्फ शुरू के दिनो से बल्कि बाद के भी कई वर्षो से एक जुड़ा नाम मुझे आज तक याद आता है।
बगैर किसी परिचय के यहाँ आए तमाम इन्डियन स्टूडेन्टस के शुरू के दिनो की सबसे बड़ी समस्या एक छत होती है. जिसके बगैर यहाँ एक कदम भी नही बढाया जा सकता। यहाँ कि ठंढ सड़को या पार्को मे रह कर झेली नही जा सकती। एक नाम के रहते हुए भी इन्सान बेनाम रहता है।
पता नहीं फ्राऊ ग्रानोव्स्की को मुझ पर कैसे दया आ गई!उन्होने सारे कानून परे रख कर हाऊस एन के कमरा नम्बर तीन सौ बीस की चाबी मुझे पकड़ाते हुए कहाःजा कर अपना कमरा देख लो। अगर पसन्द आए तो आज ही शिफ्ट हो लो। कल कभीं भी आ कर अपना कान्ट्रेक्ट साईन कर जाना। अपनी टूटी फूटी अन्ग्रेजी मे मुझे मेरे हॉस्टल का पता बताते हुए वो अपने सिल्वर रंग के बे एम बे मे जा बैठी।
फ्राऊ मायर से स्पष्ट ना सुनने के बाद तो मेरे आँखों के सामने ऐसा अन्धेरा छाया कि स्टूडेन्टेन फेरवाल्टूंग के ऑफिस से बाहर निकलने के बाद मेरी टांगे काँपने लगी। मुझसे खड़ा तक न हुआ जा रहा था। मै धम्म से बरामदे मे लगे एक बैंच पर एक तरह से ढेर हो गया। इस ऑफिस मे स्टूडेन्टों के आने जाने का ताँता टूट ही न रहा था। कई इन्डियन चेहरे भी नजर आए. पर उनकी आँखों मे मुझे बस हिकारत और खिल्ली ही नजर आई। मेरे सारे स्नायू शिथिल हो चले थे। ऑफिस के बन्द होने का समय भी नजदीक आता जा रहा था। मै इसी आशा मे वहाँ बैठा रहा कि शायद किसी को मेरी हालत पर तरस आ जाए. पर सभी मुझ पर एक नजर डाल कर आगे बढ जाते थे। मेरे ईर्द गिर्द एक अपरिचितों का संसार था।
ऑफिस के बन्द होने का समय आया। इसके पहले कि मुझे वहाँ से खदेड़ा जाता मैने अपना सूटकेस उठाया और चलने को हुआ था. तभी फ्राऊ ग्रानोव्स्की बाहर आई थी।
तीन दिन के बाद ही मेरा इन्ट्रेन्स एक्जाम था। दूसरे दिन से ही मै इसकी तैयारी मे लग गया। न मैने रात को रात समझा और न दिन को दिन फिर भी मै फेल हो गया. पर बर्लिन के टेक्निकल यूनिवर्सिटी के लैंग्वेज कोर्स मे मुझे एडमिशन मिल गया और मेरे तीन महीने का बीजा छ महीने के लिए एक्सटेंड कर दिया गया। मुझे काम करने की अनुमति न थी और मेरे पास एक अधेला तक न था।
मै नही समझता कि मेरे शुरू के महीनो का संघर्ष या इन छ महीनों की लानतों को सिर्फ मैने अकेले ही भुगता हो।
मेरे ही फ्लोर पर एक छोटे से कमरे मे एक केन्या का लड़का रहता था। उसका नाम इनोसेन्ट था। उसके पास काम करने की अनुमति थी. पर काम वाम उसके वश का न था। चौबीस घन्टे वो नशे मे धुत्त रहता था। न उसे खाने की परवाह थी न पहनने की। कभीं कभार वो कम्बाईन्ड कीचन मे बस लोगों के छोड़े खाने ही चुराने आता था। उसके वर्क परमिट से ही मैने अपने शुरू के छ महीने निकाले. पर मुझे अपने कमाये पैसों का साठ प्रतिशत उसे दे देना पड़ता था।
कमरे के किराये के मामले मे फ्राऊं ग्रानोव्स्की मेरे लिए हमेशा उदार रही जो मै समय से न दे पाता था। मेरी मजबूरियाँ वो समझती थी। इन्डिया से लाए कपड़े या माँ के बुने स्वेटर्स शायद यूरोपीय स्तर के न थे. पर मै उन्ही को पहनता था।
कई वर्षो के बाद अपनी किसी बातचीत मे फ्राऊ ग्रानोव्स्की ने मुझसे एक बार कहा भी थाःमै तुम्हारे शुरू के दिनों और तुम्हारे जीवन को जानती हूँ। तुम्हे किसी भी तरह की चकाचौंध अन्धा न कर पाई। तुम ठहरते तब हो जब तुम चाहते हो। चलते तब हो जब तुम चाहते हो। तुम्हारा हँसना बोलना. तुम्हारा खिलखिलाना सब कुछ तुम्हारे चाहने से ही जुड़ा है। तुमसे तुम्हारी अपनी धूरी छुडवाई नही जा सकती।
फ्राऊ ग्रानोव्स्की को मै शारलोटे नाम से शायद साल भर के बाद ही पुकारने लगा था। सप्ताह मे कम से कम एक बार वो तो मेरे कमरे मे आती ही थी। मेरा हाल चाल पूछ कर एक कप चाय पी कर वो चली जाती थी। मैने उससे कभीं उसकी उम्र न पूछी पर मेरा अनुमान गलत न था। सन छियासी मे वो पैंतालीस वर्ष की थी. पर उम्र के मकड़े ने अभीं तक न तो उसके चेहरों पर न उसके गले पर न और कहीं अपना मकड़जाला बुनना शुरू किया था और न ही कहीं मुझे कोई नीली उभरी नसें ही नजर आती थीं।
एक उन्मुक्त व्यवस्था और समाज मे मै आ गया हूँ. ये धीरे धीरे मुझ पर जाहिर होता चला जा रहा था।
मेरे जर्मन की क्लासें आठ बजे शुरू होती थीं और बारह बजे खत्म हो जाती थीं। इसके बाद मेरे पास समय ही समय होता था। सिबसेन्टेन यूनि नाम के रोड पर ही टेक्निकल यूनिवर्सिटी की मेन बिल्डिंग थी और कई संकायें भी थीं। इसी सड़क पर एरन्स्ट रोयटर प्लात्स नाम के मेट्रो के समीप ही टेलिफुन्कन हाऊस था. जहाँ शाम को तमाम दूसरे लैग्वेजों की क्लासें लगती थी. जिनकी कोई फीस न थी। समय काटने के लिए मै वहाँ स्पेनिश और फ्रेन्च सीखने लगा। आठ बजे तक मेरी क्लासें चलती थी। टेलिफुन्कन हाऊस से मेरे हॉस्टल तक सिबसेन्टेन यूनि की चौड़ीं सड़क और उससे लगे फूटपाथों के किनारे पता नही कहाँ कहाँ की लड़कियाँ हर दस कदम पर आ कर खड़ी हो जाती थी. जिनमे से तो कई मुझे बीस वर्ष की भी न लगती थी। सड़क के एक ओर एक पुल था जिसके ऊपर से लोकल ट्रेने गुजरती थीं। इस पुल के नीचे कई गैरेज थे। वहीं ये अपने ग्राहकों को ले जाती थीं। सड़क के दूसरी ओर लम्बी लम्बी ट्रकें खड़ी रहती थीं जिनके ड्राइवर्स भी इन्हे अपने कैबिनों मे ले जाते थे।
मेरे हॉस्टल के समीप ही एक टीयर गार्डेन नाम का एक बहुत ही बड़ा पार्क था। इसी पार्क से होकर मै सोलोगीशर गार्डेन के आल्डी मे खरीददारियों के लिए जाता था। गर्मी के दिनो मे ये पार्क खचाखच भरा रहता था। यहाँ भी खुले आम कुछ इसी तरह के धन्धे होते थे। अब अगर इसे किसी ने अपना पेशा ही बना रखा हो तो उसकी कैसी नुक्ताचीनी!बस इनकी मजबूरियाँ मुझे कहीं न तो दिखाई देती थीं और न समझ मे आती थीं।
मेरे जर्मन के क्लास मे एक पेरू की भी लड़की पढती थी सिल्वाना। बड़े तीखे नैन नक्श थे उसके। क्लास मे वो मेरे बगल मे ही बैठती थी। शुरू के दो महीने वो किसी जर्मन परिवार मे रही। बाद मे वो मेरे हॉस्टल के सामने वाले हॉस्टल ओ मे आ गई। अक्सर मै दूसरे लड़कों से उनके उसके साथ रात गुजारने की सुनता था. पर मै उनकी बातों पर कान न रखता था।
उन दिनो रोमांस की मेरी अपनी व्याख्या थी। एक प्रक्रिया जिसमे मुझे पिघलना था. उसके बाद ही अन्यान्य बातें आती थी। सिल्वाना को ये सब बड़ा उबाऊ लगता था।
एक बार हाऊस ओ के डिस्को कम बार मे उससे मेरी मुलाकात शनिवार की शाम को हुई। अपने बीयर का ग्लास लिए वो मेरे पास आ पहुँची। मै भी बार पर बैठा बीयर पी रहा था। जब तब वो मुझे नाचने के लिए भी बाध्य करती रही और मै उसे मना करता रहा। दो बजने को आए। डिस्को के बन्द होने का यही समय होता था। मै भी उठा और चलने को हुआ। तभी सिल्वाना ने कहाःआओ मेरे कमरे मे। वहाँ आराम से बैठ कर कीवी

की लीकर पीते हैं।
मै भी सोचा क्या बुरा है!चले चलो।इसी वहाने उसकी ऑखों मे ऑखें डाल लूँगा।
मुझे एक ग्लास मे लीकर डाल कर सिल्वाना अपने कमरे के पर्दे के पीछे ही अपने कपड़े बदलने लगी।जब वो पर्दे से बाहर आई तो उसके बदन पर एक ढीला ढाला नीले रंग का मुचड़ा हुआ टी शर्ट और एक बेहद तंग और छोटी सी जीन्स की घिसी शौर्टस थी।अपने ग्लास मे लीकर डाल कर वो मेरे सामने लगे पढने वाली मेज पर जा बैठी।एक सरसरी नजर से मैने उसका कमरा देखा.जहॉ सिर्फ अस्तव्यस्ता थी।उसके बिस्तर का तो और बुरा हाल था।आधे से ज्यादी चादर जमीन पर.तकिये यहॉ तो रजाई वहॉ।कमरे की दीवारों पर न जाने कितने हॉथ की बुनी छोटी छोटी चट्टाईयॉ यहॉ वहॉ उटपटांग ढंग से टंगी थीं.जिन पर धूल ही धूल जमे थे।
एक ही सॉस मे वो ग्लास खाली करके फिर से अपना ग्लास भरने लगी।आधे नशे मे तो वो पहले से ही थी।वो मुझसे कुछ कहना चाहती थी।एक दो बार मेरा नाम लेकर उसने कुछ कहना भी चाहा फिर पता नही क्यों टाल गई।मै निर्निमेष उसे देखा जा रहा था।जब तब वो मेरी ओर देखती थी फिर अपनी नजरें फेर लेती थी।अपना ग्लास खत्म कर के मै चलना चाहा तो वो अपने मेज से झटके से कूदी और बड़ी मजबूती से मेरा दॉया वॉह पकड़ कर कहीःमै जानती हूँ कि तुम मुझसे क्या चाहते हो!मेरा दोस्त पेरू मे मेरे लौटने का इन्तज़ार कर रहा है।मैने उससे शादी का वायदा कर रखा है।मै अपना वायदा नही तोड़ सकती।तुम मुझे अपने दलदलों मे न घसीटो।मेरे साथ जब भी सोना चाहो.आकर सो लो।इसके अलावे मै तुम्हे कुछ नही दे सकती।क्लास के दूसरे लड़के इसके अलावे मुझसे कुछ नही चाहते और मै भी उनसे इसके अलावे कुछ नही चाहती।
मै अपनी वाहॅ छुड़वा कर अपने कमरे मे चला आया।
एक देवदास मेरे मन मे कहीं से न जाने कब आ बसा था.जो रह रह कर जगता था और रह रह कर सोता था।मैने क्लास मे सिल्वाना के बगल मे बैठना तो बन्द कर ही दिया.उसके हलो हाय का जवाब भी देना बन्द कर दिया।न चाहते हुए भी उसका तिरस्कार करना शुरू कर दिया।मै उसके दिल को ठेस पहुँचाना चाहता था।पता नही मै कितना कामयाब रहा!पर आए दिन मै अपने क्लास के दूसरे लड़कों से सुनता रहा कि पेरू की लड़कियॉ बड़ी टेम्परामेंटल होती हैं।
मेरा देवदासत्व किसी काम न आया।सिल्वाना अपने वायदे पर डटी रही और अपना जीवन अविचलित जीती रही।उसने अपने को बिल्कुल अन्जान बना लिया।मुझसे हलो हाय तो दूर मुझे लगता था.जैसे वो मुझे पहचानती तक न हो।
दो वर्षो के बाद पता नही क्यों मुझे उसकी याद आई!मै एक निर्लज्ज की तरह उससे मिलने गया।जब मैने उसका दरवाजा खटखटाया तो दरवाजा एक कुर्दे ने खोला।अपने कमर तक बढे बाल वो घोड़े की पूँछ की तरह एक रीवन से वॉध रखा था।एक दो इंच की चढी मे वो मेरे सामने करीव करीव करीब नंगा खड़ा था।उसके बदन पर वाल ही वाल थे।उसे देख कर एक बार तो मेरा मन डूबने को आया।मन मजवूत करके मैने उससे सिल्वाना के बारे मे पूछा।पता चला कि वो छ महीने पहले पेरू वापस चली गई है।मैने राहत की सॉस ली।
सिल्वाना का पेरू वापस चला जाना मुझे ज्यादे पच्य लगा।अगर वो अपने कमरे मे इस भालू के साथ दिख गई होती तो मेरा जीवन ही दूभर हो जाता।
आज तक मुझे बर्लिन मे घोषाल बावू की कही एक बात भूले भी नही भूलाई जातीःपता है तुम्हे!यूरोप या दूसरे देशों की लड़कियॉ अपना नथ उतरवाते समय एक बीहड़ जंगल मे खो जाती हैं.जहॉ एक अलाव जलता होता है।अलाव के चारो तरफ एक से एक बदशक्ल हव्शी अपने गुप्तांग किसी पत्ते से ढॅके अपनी ढपलियॉ बजाते कूद कूद कर नाचते होते हैं।ये लड़की अलाव से थोड़ा हटकर अपने घूटनो पर अपना सर धरे एक मेमने की तरह बैठी होती है।अचानक एक भीमकाय लौहबदनी हव्शी पता नही किन किन जानवरों के हडियों की माला पहने नशे मे धुत्त वहॉ आता है और वहॉ बैठी मेमने को एक झटके मे अपनी गोद मे उठाकर फिर जमीन पर पटक देता है।इस मेमने के कानो मे ढपलियों का स्वर एक बार तेज हो कर फिर मद्धम होने लगता है फिर खो जाता है।इन लड़कियों को प्यार नही एक भट्टी मे तपी लाल रंग की मोटी सलाख चाहिये।
घोषाल बावू सुबास चन्द्र बोश के जमाने से बर्लिन मे रह रहे थे और एक एकाकी जीवन जी रहे थे।पता नही किस वजह से उनका एक जर्मन पत्नी से अपना वैवाहिक जीवन टूटा!सम्भवतया उनकी जर्मन पत्नी शादी से पहले कई बार इस बीहड़ जंगल मे उन्ही के शब्दों मे उस भीमकाय लौहबदनी हव्शी से अपना नथ उतरवा आई थी और अपना नथ उनसे भी इसी तरीके से उतरवाना चाहती थी।
अब रविन्द्र नाथ टेगोर की गीतांजली से प्रभावित और अभिभूत घोषाल बावू एक भट्टी मे तपी लाल सलाख कहॉ से लाते!
मेरे मन मे तो बंगाल का सिर्फ एक देवदास जी रहा था और उनके अन्दर तो पूरा बंगाल ही।
खैर इसके पहले मै सिल्वाना की सॉवली तलैया मे छलांग लगाता वो अपने मन का नथ अपनी मुट्ठी मे भींचे पेरू सदा के लिए वापस चली गई।
बस एक बात का मुझे आसरा था कि शारलोटे का संबल मेरे पास है।जब मेरा मन घबराता था.तब उसे ही मै फोन कर लिया करता था।बर्लिन मे मुझे आए दो वर्ष हो चले थे.पर मै शारलोटे के बारे मे कुछ नही जानता था।
ऐसे ही किसी एक शनिवार को उसने मुझे फोन करके अपने ऑफिस मे आने को कहा।मै अचंभित वहॉ भागा गया।ऑफिस मे शारलोटे अकेली बैठी थी।जब उसने अपनी नजरें उठाई तो मेरा जी धक्क करके रह गया।उसका पूरा चेहरा ऑसुओं से भींगा हुआ था।इशारे से उसने मुझे बैठने को कहा।मै चुपचाप बैठ गया।शारलोटे से कुछ बोला न गया।वो अपने को सहज बनाने मे लगी रही।
शारलोटे के पति गुजर गए थे।वो थे भी थोड़े ज्यादे उम्र के।शारलोटे की परवरिश एक जर्मन दम्पति ने की थी।उसके असली मॉ बाप को ढूँढा न जा सका।दो ही बातें शरलोटे को सम्भव लगती थीं।या तो उसके मॅा बाप सेकेव्ड वल्ड वार के बम बारी मे मारे गए या फिर यहूदी थे ओर हिटलर के डर से किसी दूसरे देश भाग खड़े हुए।वो एक हाईम मे दूसरे वच्चों के साथ पल रही थी।जब वो तीन वर्ष की थी.तब इस दम्पति ने उसे एडाप्ट कर लिया।इनके पास अपनी भी एक वेटी थी.जो उन दिनो आठ महीने की थी।
समय गुजरता गया।शारलोटे स्कूल की पढाई के वाद यूनिवर्सिटी न जा कर एक तीन साल का कोर्स करने लगी।जब वो इक्कीस वर्ष की थी.तब उसे अपने जीवन मे शादी का पहला प्रस्ताव मिला और वो भी अपनी उम्र से पन्द्रह वर्ष बड़े हेरवर्ट का.जिसे वो अपने बचपन के दिनो से जानती थी।वो कोई गैर न था बल्कि उसकी तत्कालीन मॉ का चचेरा भाई था।पढाई लिखाई तो उसने न की थी.पर वो पत्थरों से मूर्त्तियॉ तराशता था।कई बार वो शारलोटे को अपने कारखाने मे भी ले जा चुका था जो एक टूटे फूटे गैरेज मे था।उसकी एक दो मूर्त्तियॉ बिक ही जाती

थी। उसका बाकी खर्चा उसके माँ बाप उठाते थे।
शारलोटे ने हेरवर्ट के उम्र की परवाह न करते हुए शादी के लिए हाँ कह दी। उसके माँ बाप इस शादी के सख्त खिलाफ थे. जिसकी शारलोटे को कोई परवाह न थी।
शादी के एक वर्ष बाद उसने एक बेटा जना. जिसका नाम उसने मिखाएल रखा। शादी के बाद शुरू के दिन संघर्ष मे ही गुजरे। घर का खर्चा चलाने के लिए शारलोटे को एक नौकरी ढूँढनी पड़ी। उसने अपने सास ससूर को अल्विदा कहा और अपने पति और बेटे के साथ एक दो कमरे के मकान मे आ गई।
अपने पति के लिए भी उसे कुछ न कुछ करना था। अपने बैंक से कर्ज लेकर उसने अपने पति के लिए एक स्टुडिओ खोली। बड़े आकर्षक ढंग से वहाँ हेरवर्ट की तराशी मूर्त्तियाँ सजाई। धीरे धीरे हेरवर्ट के पास लोगों की माँगे आने लगी। ड्राईगरूमों मे पत्थर की मूर्त्तियों के रखने का रिवाज न उन दिनो था और न आज है. पर लॉनो मे. बड़े बड़े पार्को मे बड़े बड़े ऑफिसों के सामने या चौराहो पर ऐसी मूर्त्तियाँ रखी जाती हैं। समय के साथ हेरवर्ट का काम इतना बढा कि शारलोटे को अपनी नौकरी छोड़ कर स्टुडिओ मे आना पड़ गया। समय से डिलिवरी देने के लिए हेरवर्ट भूखा प्यासा दिन रात अपने काम मे जुटा रहता था। परिवार की माली हालत तो कब की सुधर चली थी।
शारलोटे के पास अब एक चार कमरों का अपना निजी मकान था जो बर्लिन के एक बहुत ही अच्छे इलाके मे था। जो भी थोड़ा बहुत समय उसे मिल पाता था. वो अपने मकान की सजावट मे लगाती थी।
मिखाएल भी पढने लिखने मे बड़ा मेधावी निकला। स्कूल की पढाई के बाद वो वकालत पढने लगा। उसे अपने नाक नक्श और कद अपने बाप से मिले थे। एक अन्धा भी उसे देख कर कह सकता था कि वो हेरवर्ट का बेटा है।
फिर एक समय आया जब बर्लिन मे ही नही पूरे जर्मनी मे कपड़ों की बड़ी बड़ी दूकानों के शो विन्डोस पर प्लास्टर ऑफ पेरिश के बने पुतले सजा धजा कर रखे जाने लगे। हेरवेर्ट पर काम का बोझ इतना बढा कि उसे एक दूसरी स्टुडिओ लेनी पड़ी और काम पर दसों आदमियों को रखना पड़ा। दस साल के अन्दर हेरवर्ट ने ठीक ठाक पैसा जोड़ लिया था। बस जब वो साठवीं साल मे कदम रखा तब उसके स्वास्थ्य ने जबाब दे दिया और वो बीमार रहने लगा। उसे संतोष बस एक बात का था कि इस ब्राँच मे प्रतिस्पर्धा बढने से पहले जितना भी बटोरा जा सकता था. वो बटोर चुका था। मिखाएल अपनी पढाई खत्म करके पब्लिक प्रोसिक्यूटर बन गया था। उसने इवोन नाम की एक लड़की से शादी कर ली और समय के साथ एक बेटे और एक बेटी का बाप बन गया।
हेरवेर्ट अब कुछ ज्यादे ही बीमार रहने लगा। उसने अपनी दोनो स्टूडिओ बेच दी। छ साल तक वो अपनी बीमारी से लड़ता रहा। उसका एक पॉव अस्पताल मे और दूसरा घर पर होता था। उसे लन्ग कैंसर हो गया था। उसे एक थिरैपी दी जा रही थी। दूसरे शब्दों मे उसकी मौत से लड़ा जा रहा था। जब तब उसे अस्पताल मे भी रख लिया जाता था और मोर्फिम की बड़ी बड़ी खुराकें दे कर उसे सुला दिया जाता था।
वो अपनी ऑख शारलोटे की गोद मे मूँदे. उसका ये सपना पूरा न हो सका। अस्पताल के फोन पर शारलोटे अपने नाईट गाऊन मे ही स्टेयरिंग सम्हाली और बिना किसी स्पीड लिमिट की परवाह किये अस्पताल जा पहुँची. पर हेरवर्ट उससे रूठ कर बहुत दूर जा चुका था।
क्योनिगिन लुउईसेस्ट्रासे के एक कॉफी हाऊस मे बैठा मै शारलोटे का इतिहास सुने जा रहा था।
इस लम्बी मुलाकात के बाद उससे मेरी छिटपुट मुलाकातें सिगमुन्डसहोफ मे ही होती रही. जो बस हालचाल पूछने तक ही सीमित रही। एक बार वो सिगमुब्डसहोफ आ कर मुझे अपने घर लिवा गई. जहाँ जाने के बाद मुझे उसके सालगिरह का पता लगा। इस बात का उसने मुझे कोई भान तक न होने दिया। इसी दिन मेरी जान पहचान उसके बेटे के परिवार से हुई। इनके अलावे कोई दूसरा मेहमान वहाँ न था। फोल्क्स पार्क के बीचो बीच शारलोटे का चार कमरों का मकान जितना मुझे बाहर से भव्य लगा. उससे कहीं बहुत ज्यादे अन्दर से। ड्राईन्गरूम मे हरवेर्ट की तराशी कई मूर्त्तियाँ लकड़ी के नक्काशीदार मेजों पर सजी पड़ी थी। बालकोनी की तरफ एक शीशे की लम्बी सी मेज पर एन्टिक गमलों के पौधे तो छत तक बढ आए थे। मुझे ये पता न था कि हेरवर्ट पैंटिन्ग भी करता था। कमरे से लेकर फ्लोर तक मे उसी की बनाई पैन्टिंग्स मँहगे फ्रेमों मे टंगी पड़ी थी। हर कमरे की फर्श पर वेलोर की दरियाँ बिछी थी। हेरवर्ट और शारलोटे के शादी की बस एक छोटी सी तशवीर सोने वाले कमरे मे थी। मुझे तो वहाँ की हर चीज ही एन्टिक लगी जिनकी कीमतें मै नही जानना चाहता था।
शारलोटे की सालगिरह पर मै कुल तीन बार गया. पर इनके अलावे मै उससे कई बार मिला। जब भी मै बुन्डेस प्लात्स मेट्रों के पास एक श्रीलंकन की दुकान पर करैला भिन्डी खरीदने गया. बिना उससे मिले मै वापस न आया।
बिना सोचे समझे उसने अपनी नौकरी छोड़ दी जो उसे एक हद तक व्यस्त रखी थी। हेरवर्ट अपने गुजरने के बाद साल भर उसे अपने सानिध्य से जकड़े रखा। कभीं वो ड्राईन्गरूम मे बैठा नजर आता था तो कभीं सोती शारलोटे की रजाई परे करके उसके बगल मे आके लेट जाता था। इसी दौरान मै शारलोटे की एकाध सहेलियों से भी मिला. जिन्होने उसे इधर उधर के जंजाली बातों मे फॉसे रखा था। पता नहीं ताम्बे को गला गला करके वो कौन कौन सी छोटी छोटी आकृतियाँ ढालती रहती थीं या फिर हेरवर्ट के लिखे पत्रों के एक एक अक्षर मे उसके पूरे व्यक्तित्व के आयाम ढूँढती थीं। मुझे तो सब की सब एक नम्बर की काईयाँ लगती थीं। अपनी बकवासों मे शारलोटे को उलझा कर उससे अनाप शनाप पैसे ऐंठना ये ही उनका धन्धा था। मै एक मूक श्रोता ही बना रहा। शारलोटे सब कुछ सुनाती रहती थी और मै उसे बिना किसी टिका टिप्पणि के सुनता रहता था।
अपनी सहेलियों की सच्चाई उस पर कैसे खुली ये मै नही जानता. पर अचानक वो दूसरे दर्शनों से जा उलझी। दलाई लामा की पश्चिमी देशों के रहन सहन और उनके रीत रिवाजों मे रूचि और हर एक दूसरे शब्द के बाद उसका उन्मुक्त हँसना और अपने पूरे बदन से हँसना शारलोटे को इतना भाया कि वो बौद्ध धर्म से जा उलझी और महीनो तड़रम तड़रम गच्छामि रटती रही। जब उसे ये दर्शन उबाऊ लगा तो वो हरे रामा हरे कृश्ना के भक्तों की सहेली बन गई और अपने बाल तक मुँड़वा डाली। प्रसादम के नाम पर खीर गोझिये पूरी पापड़म दाल और मसाला वाला भात उसे इतना अच्छा लगा कि वो बिना किसी झेंप के गेरूए रंग की साड़ी अपने स्कर्ट मे यहाँ वहाँ खोंस कर होरे रामा होरे रामा रामा रामा होरे होरे गा गा कर सड़कों पर नाचने और कूदने भी लगी। दो बार वो कूदी नही कि उसकी साड़ी जमीन पर होती थी जिसमे उलझ कर वो अपना नाक मुँह तक तुड़वा लेती थी।
अब आया इस्लाम. जो उसे एजिप्ट के एक अधेड़ स्टूडेन्ट के करीब लाया। वो वर्षो से सिगमुन्डसहोफ के हॉस्टल ई के एक छोटे से कमरे मे बिना किसी कान्ट्रेक्ट के रह रहा था। अपनी नौकरी छोड़ने से पहले शारलोटे बर्लिन मे बेचारे के लिए एक छत सुरक्षित कर गई थी। पता नही वो

चालीसवें सिमेस्टर मे था या पच्चासवे मे!पर उसे ये भी पता न था कि उसका इन्सटिच्यूट कहॉ है!बर्लिन मे होने वाले कन्सट्रक्शनों पर वो रात की चौकीदारी किया करता था और शनिवार रविवार को सिबसेन्टेन यूनि मे लगे फ्लो मार्कट मे अपने घर से मंगवाए हेन्डिक्राफ्टस बेचता था।जानने को तो शारलोटे उसे सिगमुब्डस होफ से ही जानती थी.पर इस्लाम मे पता नही उसे क्या पसन्द आया कि वो उसे अपना दिल तक दे बैठी।लंडन से वो कुरान से सम्बन्धित पता नही कौन कौन से विडिओस और कैसेटस मंगवा कर रात दिन देखा करती थी।

एक बार वो इसी बन्दे के सालगिरह पर सिगमुन्डसहोफ के हॉस्टल ई मे एक अरबी औरत का श्रृंगार करके आई थी।जिधर देखो उधर ही शारलोटे की चर्चाथी।उसे अपनी बदनामी की भी फिक्र न थी।

अपनी पच्चासवीं सालगिरह मे उसने मुझे भी बुलाया था।इस बार कुछ ज्यादे ही मेहमान आए थे।मिखाएल के परिवार के अलावे मै किसी को भी नही जानता था।शारलोटे के दोस्त से मै परिचित तो न था पर उसे मै शक्ल से जानता था।गाढे कत्थे रंग के सूट मे इसी रंग से मिलती जुलती टाई चमचमाते काले जूते.दॉई कलाई पर सोने की घड़ी और एक सोने की चैन.जिसकी पट्टी पर उसका नाम मेहमूद खुदा था।करीने से छँटी दाढी .पीछे की तरफ कढे बाल और ऑखों मे पतली सी काजल।मेहमूद ही आए दूसरे मेहमानों के खाने पीने का ख्याल रख रहा था।शारलोटे भी एक काले रंग की जालीदार ब्लाऊज और एक घाघरा पहने हुई थी जिनमे न जाने कितने रंग विरंगे सितारें टँके हुए थे।सर पर उसने मोतियों का एक ताज पहन रखा था।आधे से भी ज्यादे उसकी पेट और कमर खुली थी।एक काले रंग का दुपट्टा भी उसके गले मे लिपटा पड़ा था।मिखाएल भी मेहमानों की सेवा मे जुटा हुआ था।मै चुपचाप मिखाएल की पत्नी इवोन की बगल मे बैठा शारलोटे की लीलायें देख रहा था।मेरी तरह इवोन को भी सन्निपात मारे हुए था।उसके दोनो बच्चे तो अपनी सगी दादी को भी नही पहचान रहे थे।

अचानक मेहमूद ने ताली बजा कर मेहमानो का ध्यान अपनी ओर खींचा और सगर्व शारलोटे के बाऊख टान्स का एलान किया।मेरी तो ऊपर की सॉस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई।सेडे सेट पर मेहमूद एक अरबी गाना लगा आया और शारलोटे अपने गले का दुपट्टा लहरा लहरा कर अपना पेट हिलाने लग पड़ी।मेहमूद से भी न रहा गया।वो भी एक डफली बजा बजा कर शारलोटे के संग नाचने लग पड़ा।शारलोटे को मै मन ही मन अल्विदा कह चुका था जिसका उसे कोई भान न था।एक न एक दिन मुझे उसे कहना ही था कि हर रास्तों पर मै उसका साथ नही दे सकता।जैसे उसे अपना जीवन जीना है जीए।

मुझे लम्बा इन्तजार न करना पड़ा।कुछ ही महीने गुजरे थे कि मुझे उसके शादी का निमंत्रण मिला.जिसे पढ कर मैने फाड़ दिया।उसके शादी का दिन नज़दीक आता जा रहा था।रोज ही दिन मे दसों बार फ्लोर का कोई न कोई लड़का आ कर मुझसे कहताःतुम्हारे लिए फोन.पर मै टेलीफोन पर जाता ही न था।शादी से एक दिन पहले वो मेरे कमरे का दरवाजा भी मिनटों पीट कर चली गई।मै कमरे मे ही था.पर दरवाजा न खोला।

नफरत से भी बुरी मेरे मन की एक अवस्था है जिसमे एक व्यक्ति अपने सारे मूल्य खो कर अपना अस्तित्व खो देता है।फिर मै उसके सुख दुख मे शरीक ही नही होता।अब मुझे मनाया और समझाया नही जा सकता।

कई वर्षो के बाद एक दिन अचानक मिखाएल मुझसे टकरा गया और न चाहते हुए भी मुझे शारलोटे के बारे मे वो सब कुछ सुनना पड़ा.जिसका थोड़ा बहुत अंदेशा मुझे पहले से ही था।शारलोटे बर्लिन मे मेहमूद से शादी करने के बाद एजिप्ट जा कर उससे निकाह भी कर आई।साल भर वो विवाहता भी रही।मेहमूद पर उसने दोनो हॉथों हेरवर्ट की कमाई पानी की तरह बहाई और अपने निठल्ले पति के लिए बर्लिन के सबसे मंहगे इलाके मे एक दुकान भी खुलवाई जहॉ वो एजिप्ट से कपड़े और दूसरे सामान मँगवा कर बेचने लगा।इस इलाके में टूरिस्ट भी दवा के आते थे।दुकान चल निकली.पर सारा मुनाफा मेहमूद उठा कर अपने घर भेज देता था।शारलोटे को पैसों की कोई परवाह न थी।उसे बस एक बात खलती थी कि अपने ही मकान मे उसकी हैसियत समय के साथ एक लौंडिया जैसी हो चली थी।पैसे के मामले मे शारलोटे की उदारता मिखाएल परिवार को भी बड़ी खलती थी।आखिर शारलोटे के बाद सारी चल और अचल सम्पति इसी परिवार की थी.पर शारलोटे को कौन समझाए!उसने इनसे भी अपना नाता तोड़ रखा था।

निर्णायक समय तो तब आया.जब बात तलाक़ तक जा पहुँची।मेहमूद तो उसे गेरूए रंग की साड़ी फिर से पहनवाने के पीछे पड़ गया था।बड़ी मुश्किल से उसे अनाप शनाप पैसे देकर उसने फोल्क्स पार्क वाला निजी मकान बचाया।मेहमूद ने उसे ठीक ठाक लूटा।अब जो कुछ भी उसके पास बचा था.वो अपने बेटे के परिवार पर लुटा रही थी।

मैने अपना मन टटोला पर वो अपनी उसी अवस्था मे था।उसे अब अंदोलित नही किया जा सकता था।मेरी क्षमा इतनी पंगु हो चली थी कि मै कुछ भी समझना नही चाहता था और मै शारलोटे को क्षमा कर सकूँ सिर्फ इस वजह से मै कुछ समझना नही चाहता थाः

प्रमोद कुमार सिंह